अध्याय
06

यह दंतुरित मुस्कान

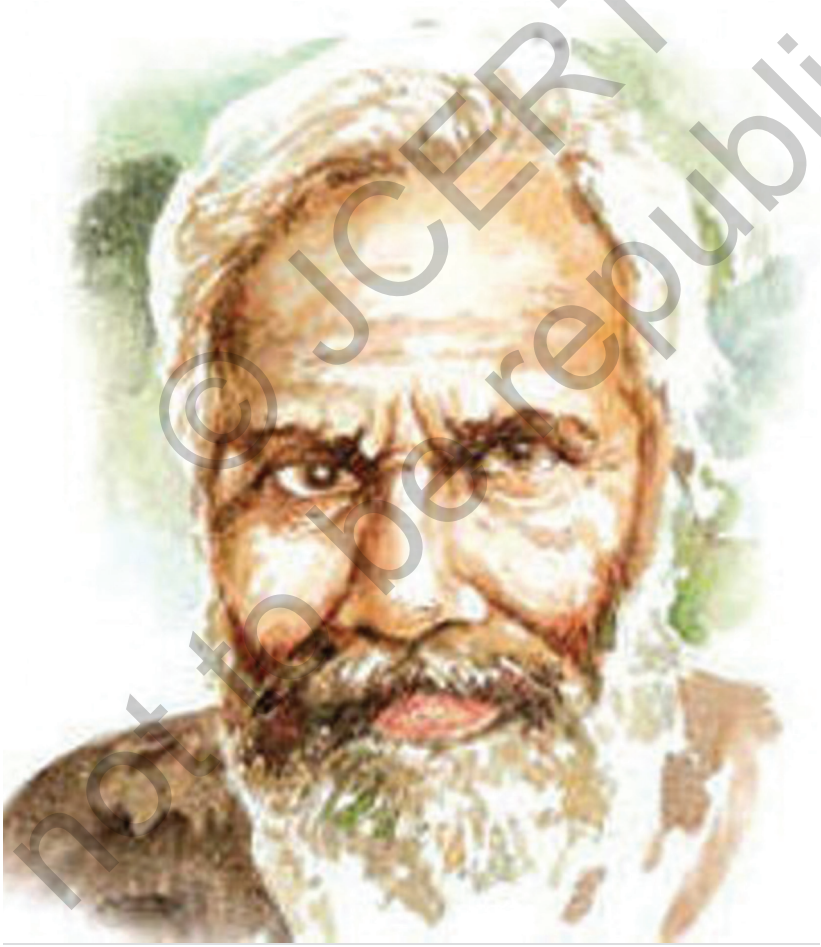

नागार्जुन

© JCERT not to be republished

नागार्जुन

लेखक परिचय

नाम नागार्जुन

जन्म स्थान बिहार

जिला दरभंगा

जन्म वर्ष 1911

मृत्यु वर्ष सन 1998

उपनाम – नागार्जुन (हिंदी में,) यात्री(मैथिली) में

उपाधि –जनकवि, आधुनिक कबीर

काल आधुनिक काल (प्रगतिशील धारा)

पहचान – कवि और लेखक

साहित्यिक विशेषताएं-नागाजुर्न जनचेतना और लोक संवेदना से युक्त कवि हैं। लोक संवेदना से संबंध स्थापित करने में इन्हें कभी कठिनाई नहीं हुई। कई लेखक की रचनाओं है जिनकी रचनाएं पढ़ने या सुनने में इतनी आनंदित नहीं रही है जितनी की नागार्जुन की रही है। नागार्जुन की कविताएं काफी लोकप्रिय रहे हैं। इनकी रचनाओं में संप्रेषण की कभी समस्या नहीं रही है। पाठक सीधे तौर पर रचनाओं से अपना संबंध स्थापित कर लेते हैं। यह संस्कृत के पंडित थे और संस्कृत काव्यशास्त्र से भलीभांति परिचित थे, फिर भी इनकी रचनाओं में शास्त्र कभी हावी नहीं हुआ। अड़सठ(68) वर्ष तक की आयु में भी ये लेखन कार्य से जुड़े रहे। आइए इनके साहित्यिक विशेषताओं को कुछ बिंदुओं के द्वारा समझा जाए-

आमजन की पीड़ा-जनवादी कवि होने के नाते उन्होंने सदैव ही आम जनता की पीड़ा को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। किसान, मजदूर, रिक्शा चालक, बस ड्राइवर प्रवासी आदि उनकी रचनाओं के एक प्रमुख हिस्सा रहे हैं। जैसे 'खुरदरी पैर' नामक कविता में में उन्होंने एक रिक्शा चालक की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है।

तीखे राजनीतिक व्यंग—नागार्जुन अपने सीधे तीखे व्यंग के कारण आधुनिक कबीर भी कहे जाते हैं। वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों से वे खुश नहीं थे।आओ रानी हम ढोएंगे पालकी कविता में उन्होंने ब्रिटेन की महारानी का स्वागत करने पर नेहरू की सीधी आलोचना की है।

अनछुए विषयों पर रचनाएँ – इनकी रचनाएँ जनता को संबोधित करती हुई रचनाएं थी विशिष्ट व्यक्तियों, विशिष्ट ज्ञानियों के लिए इनकी रचनाएं नहीं थी। कीचड़ का स्पर्श बोध, जुगनू का जंगल में विचरण, छोटे दूध मोहे बच्चे की दंतुरित मुस्कान फसल आदि जैसे अन्य विषयों पर इनकी रचनाएं देखने को मिलती है।

विद्रोह और क्रांति के स्वर- 'महा शत्रुओं की दाल न गलने देंगे' आदि जैसे रचनाओं से हम उनके विद्रोही और क्रांति के स्वर को देख सकते हैं। अपने विद्रोही स्वभाव के कारण इन्हें इमरजेंसी में जेल तक जाना पड़ा था।

प्रकृति संबंधी रचनाओं की व्यापकता -नागार्जुन स्वभाव से घुमक्कड़ थे, जो नाम इनके यात्री नाम को सार्थक करता है। पहाड़ों

© JCERT not to be republished

से लेकर मैदानी इलाके की प्रकृति पर इन्होंने ढेर सारी रचनाएं की। 'बादल को घिरते देखा', 'सफेद बादल', 'बादलों ने डाल दिया है घेरा', 'चांदनी की हंसूली' आदि रचनाएं इनके पहाड़ प्रेमी होने के पर्याप्त सबूत देते हैं। उसी प्रकार 'बसंत की अगवानी', 'नीम के दो टहनियां', 'शरद पूर्णिमा' आदि रचनाएं मैदानी इलाके की प्रकृति की सुंदरता को दिखाने के लिए पर्याप्त है।

भाषा शैली-इनकी रचनाओं में प्रयुक्त होने वाली भाषा शैली सामान्य जनों के लिए थी विशिष्ट व्यक्तियों के लिए नहीं यह संस्कृत के पंडित थे और संस्कृत काव्यशास्त्र में भी इन्हें महारत हासिल था इसके बावजूद भी इनकी रचनाओं में सामान्य बोलचाल की भाषा अधिक देखी गई है जिससे पाठक सीधे तौर पर अपना संबंध स्थापित करने में सक्षम हो जाते हैं। देशज शब्दों के साथ-साथ इन्होंने लोकोक्तियों का भी खूब प्रयोग किया है जैसे 'आओ रानी हम ढ़ोएंगे पालकी' में इन्होंने एक लोकगीत हाथी घोड़ा पालकी के तर्ज पर इन्होंने इस कविता की रचना की। इनके प्रयोग के किए गए शब्द पाठकों के ह्रदय पर सीधा अंकित हो जाता है। जैसे चूल्हा रोया चक्की रही उदास आदि जैसे शब्दो से अकाल में अन्न की कमी को दर्शाते हैं।

उनके कुछ प्रमुख रचनाएं एवं विषय वस्तु -

रतिनाथ की चाची -समाज में महिलाओ की दयनीय स्थिति का चित्रण (उपन्यास)

वरुण के बेटे मछुआरों के संघर्ष की कहानी (लघु उपन्यास)

अकल के बाद-अकाल का चित्रण (कविता)

(कविता)

बादलों को घिरते देखा- हिमालय की सुंदरता का चित्रण (कविता)

आओ रानी हम ढोएंगे पालकी- नेहरू की विदेश नीतियों की आलोचना। (कविता)

मेरी नवजात सखी-नवजात शिशु बालिका पर कविता।

नागार्जुन की रचनाओं को याद करने का ट्रिक–

ट्रिक-तुमने कहा था की अकाल के बाद, बादलों को घिरते देखा फिर वरुण के बेटेऔर रतिनाथ की चाची की प्यासी पथराई आंखें सतरंगे पंखोंवाली हो गई।

कार्य पुरस्कार एवं सम्मान

1. साहित्य अकादमी पुरस्कार-1967 में मैथिली भाषा में पत्रहीन नग्न गाछ के लिए दिया गया।
2. अन्य पुरस्कार-भारत भारती सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, एवं राजेंद्र शिखर सम्मान से सम्मानित।

पाठ परिचय-

हिंदी साहित्य जगत में नागार्जुन को जनकवि के रूप में जाना जाता है। 'जनकवि' का अर्थ होता है जनता का कवि। नागार्जुन की कविताओं में सामान्य जनता का सदैव से ही कब्जा (अधिकार) रहा है।' यह दंतुरित मुसकान' कविता भी इस बात का प्रमाण है। एक प्रवासी पिता का अपने बच्चे की मुस्कुराहट पर मोहित हो जाने की यह कविता

© JCERT not to be republished

है। हिंदी साहित्य जगत में बहुत ही कम ऐसे कवि होंगे जिन्होंने बच्चे की हंसी पर,उसके विभिन्न क्रियाकलापों पर इतनी गहराई से लिखा होगा। कवि ने एक प्रवासी पिता की पीड़ा और अपने बच्चे के साथ बिताए गए क्षणों का मार्मिक वर्णन किया है। प्रवासी जीवन आज की भारतीय समाज की बड़ी समस्या हो गई है। अपने परिवार के जीवन निर्वहन के लिए प्रदेश में जाने को बाध्य हैं। प्रवासी पिता बच्चों के साथ सुख को जीता नहीं बल्कि उसे लूटता है क्योंकि पुनः उसे अपने परिवार के जीवन निर्वहन के लिए प्रदेश जाना होगा तब शायद यह सुख के क्षण उसे नसीब नहीं होंगे।आइए इस कविता के माध्यम से इसके मूल भाव को जानने का प्रयास करें-

1. मृतक का भी जीवित हो उठना-कवि ने एक छोटे बच्चे की जिसके एक या दो दांत निकले हो उसकी मुस्कान का वर्णन इस कविता के माध्यम से किया है यह कविता केवल बच्चे की मुस्कान की सुंदरता का वर्णन नहीं करता बल्कि एक पिता की उस पीड़ा का वर्णन करता है जो एक प्रवासी पिता का है। कवि कहते हैं कि शारीरिक श्रम और परिवार से दूरियों के कारण प्रवासी के जीवन में कठोरता का भाव पैदा हो जाता है।वह अपने घर की गतिविधियों से दूर रहता है घर से काफी दूर होने के कारण ससमय अपने घर पर उपस्थिति दर्ज नहीं करवा पाता। पहली बार जब प्रवासी पिता अपने बच्चे को एक और दो दांतों के साथ धूल धूसरित देह में देखता है तो उसे ऐसा लगता है मानो कमल के पुष्प उसकी झोपड़ी में खिल उठा हो और स्पर्श को पाकर प्रवासी पिता का कठोर हृदय पिघल कर जल बन गया हो।

2. प्रवासी का बांसऔर बबूल की भांति शुष्क होना-प्रवासी अपने आप को बांस और बबलू की भांति शुष्क औरकठोर मानता है।बांस और बबूल की प्रकृति (स्वभाव)शुष्क होती है। उसी प्रकार शारीरिक श्रम और परिवार से दूरियां प्रवासी के मन को शुष्क और कठोर बना देती है।

3. संरक्षक पिता की भूमिका- शारीरिक श्रम और परिवार से दूरियों के कारण प्रवासी के जीवन में कठोरता का भाव पैदा हो जाता है। वह अपने घर की गतिविधियों से दूर रहता है। घर से काफी दूर होने के कारण ससमय अपने घर पर उपस्थिति दर्ज नहीं करवा पाता। पहली बार जब शिशु अपने प्रवासी पिता को देखता है तो वह उससे अपरिचित का व्यवहार करता है प्रवासी को इससे पीड़ा तो अवश्य होती है किंतु वह स्थिति को स्वीकार कर लेता है। बाल सुलभ गुण के कारण बच्चा अपने पिता को अपलक निहारता है। पिता को यह एहसास होता है कि बच्चा इन क्रियाकलापों से थक गया होगा।ऐसे में पिता अपने बच्चे को आराम देने के लिए उससे ना चाहते हुए भी आंखें फेरने की बात करता है इस तरह से यहां पर एक पिता का बच्चे के प्रति संरक्षक होने का भाव देखा जा सकता है।

© JCERT not to be republished

यह दंतुरित मुसकान का संक्षिप्त सारांश

- कवि ने एक छोटे बच्चे की जिसके एक या दो दांत निकले हों उसकी मुस्कान का वर्णन किया है।
- यह कविता एक प्रवासी पिता की पीड़ा को व्यक्त करती है।
- पिता बच्चे को देखकर निम्नलिखित अनुभूति का अनुभव करता है।
  - धूल–धूसरित देह में देख. कर कवि को ऐसा लगता है मानो तालाब को छोड़कर कमल उसकी झोपड़ी में खिल उठा हो।
  - बच्चे के स्पर्श को पाकर प्रवासी पिता का कठोर हृदय मानो पिघल कर जल बन गया हो।
  - बच्चे का स्पर्श पाकर मानो बांस और बबूल के समान शुष्क पिता से शेफालिका के फूल झड़ने लगे हों।
- पिता के लम्बे समय तक अनुपस्थिति के कारण शिशु अपने पिता को पहचान नहीं पाता।
- प्रवासी को इससे पीड़ा तो अवश्य होती है किंतु वह स्थिति को स्वीकार कर लेता है।
- बाल सुलभ गुण के कारण बच्चा अपने पिता को अपलक निहारता है।
- पिता का अपने बच्चे की मुस्कान और कनखी मारने की कला पर सम्मोहित होता दिखाया गया है।
- वह अपनी माँ की उंगलियों को मधुपर्क अर्थात पंचामृत की भांति चूसता है।
- पिता को ऐसा लगता है कि उसकी अनुपस्थिति में उसकी माँ ने मधुपर्क स्नेह रूपी अमृत का पान कराकर उसे बड़ा किया है।
- अपने जीवन में बदलाव होने के कारण कवि अपनी पत्नी और शिशु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है।
- .बाल सुलभ गुण के कारण बच्चा अपने पिता को अपलक निहारता है।

© JCERT not to be republished

बच्चे और मां के प्रति कृतज्ञता- कविता में एक प्रवासी के टीस को व्यक्त करने की कोशिश की गई है। शिशु अपने प्रवासी पिता को पहचानने में असमर्थ होता है। प्रवासी अपने घर से दूर होता है। घर की गतिविधियों में समय पर शामिल नहीं हो पाता है। बच्चे के जन्म की एक लंबी अवधि के बाद पिता के आने के कारण बच्चा उसे पहचान नहीं पाता है इस पर पिता को टीस तो अवश्य होती है किंतु इस परिस्थिति से वह समझौता कर लेता है। वह अपनी पत्नी और शिशु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है कि इन दोनों के कारण ही वो आज कठोर जीवन में सुख की अनुभूति प्राप्त कर रहा है।

एक पिता का शुष्कता और जड़वता से मुक्त होना-एक प्रवासी सहानुभूति और प्रेम से रिक्त होकर अपने घर से दूर अपने परिवार के जीवन निर्वहन के लिए दुनिया की कठोरता को झेलते हुए हृदय शुष्क और जड़वत हो जाता है। ऐसे में बच्चे का खेलते हुए धूल धूसरित देह, बच्चे का अपने पिता काअपलक(बिना पलक झपकाए) देखना और कनखियों के साथ अपने पिता को खेलते हुए छेड़ना आदि जैसे क्रियाकलाप एक प्रवासी के हृदय की शुष्कता और जड़वता से मुक्त कराता है।

कविता की व्याख्या

पद संख्या-1

यह दंतुरित मुसकान

मृतक में भी डाल देगी जान

धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात

छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात

परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,

पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण

शब्दार्थ-

दंतुरित-	बच्चों के नए -नए दांत।
मुस्कान-	हंसी।
मृतक-	मरा हुआ व्यक्ति।
धूलि -	धूल।
धूसर -	धूल के रंग का गात (शरीर)।
जलजात -	कमल।
परस-	स्पर्श।
कठिन-	मुश्किल।
पाषाण -	पत्थर।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत सम्मिलित जनकवि नागार्जुन की कविता यह दंतुरित मुस्कान से ली गई है।पंक्ति के इस अंश में एक छोटे से दूध मोहे बच्चे की मुस्कान को देखकर एक पिता की जो मनोभाव होते हैं उसे प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

व्याख्या- कवि नागार्जुन ने एक छोटे से नवजात शिशु के मुस्कान की बखान को बड़ी सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। जब अपने नवजात शिशु को एक पिता हंसते हुए देखता है तब उसे महसूस होता है कि उसमें एक नई जान आ गई है। उसके धूल धूसरित देह

© JCERT not to be republished

देखकर कवि को लगता है की तालाब का कमल उसके झोपड़ी में खिल उठा है और उसके स्पर्श पाकर उसका जड़वत हृदय जो पाषाण रूपी है वह भी पिघल गया है।

विशेष– कवि ने मधुर एवं सरल शब्दों का प्रयोग किया है।

1. संस्कृत निष्ठखड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।
2. धूलि -धूसर, परस पाकर में अनुप्रास अलंकार है।
3. कवि ने बड़े ही मनमोहक ढंग से नवजात शिशु की हंसी का वर्णन किया है।
4. एक पिता के अपने नवजात शिशु के प्रति कोमल भाव को दिखाया गया है।
5. नए नए दांतों की मुस्कान नए जीवन का संदेश देती है।

पद संख्या-2

छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल

बाँस था कि बबूल?

तुम मुझे पाए नहीं पहचान?

देखते ही रहोगे अनिमेष!

थक गए हो?

आँख लूँ मैं फेर?

शब्दार्थ–

अनिमेष –	बिना पलक गिराए हुए एक टक।
फेर –	घूमा लेना।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत सम्मिलित जनकवि नागार्जुन की कविता यह दंतुरित मुस्कान से ली गई है। पंक्ति के इस अंश में एक छोटे से दूध मोहे बच्चे की मुस्कान को देखकर एक पिता की जो मनोभाव होते हैं उसे प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

व्याख्या– एक पिता जो प्रवासी है, अपने बच्चे की स्पर्श से मंत्र मुग्ध हो जाता है। कवि कहते है कि पिता का हृदय भावों से रिक्त है अपने आप को बांस और बबूल के भांति कोठर मानता है लेकिन बच्चे के स्पर्श से उसे यह प्रतीत होता है की बांस और बबूल समान उसके कठोर मन शेफालिका के फूल की भांति झरने लगे है।

बांस और बबूल की प्रकृति शुष्क होती है।। प्रवासी भी अपने आपको बांस और बबूल की भांति ही शुष्क मानता है क्योंकि शारीरिक श्रम और परिवार से दूरी उसे स्वभाव से शुष्क बना देता है। बच्चे का स्पर्श पिता को शेफालिका फूल के समान ही कोमल और सुंदर प्रतीत होता है। जिस प्रकार से शेफालिका के फूल एक-एक करके जब झरता है तो वह मन को बड़ा ही सुंदर प्रतीत होता है उसी प्रकार बच्चे की एक-एक क्रियाकलाप एवं स्पर्श प्रवासी पिता के मन को छू लेता है। बच्चे की छुअन इतना निश्चल और नाजुक होता है कि पिता को ऐसा लगता है कि बांस और बबूल के शुष्क पेड़ में नाजुक शेफालिका के फूल लग गए हो। अर्थात पिता का शुष्क स्वभाव कोमलता के भाव से भर गया हो।पिता का मन तब और भाव विभोर हो जाता है जब बच्चा उसे अपलक देखता रहता है। बच्चे को थकावट

© JCERT not to be republished

हो रही होगी ऐसा सोचकर ना चाहते हुए भी बच्चे कोआराम देना चाहता है यहां हम देख सकते हैं कि पिता के अंदर अपने बच्चे केलिए एक संरक्षक का भाव पैदा हो रहा है।

विशेष -

1. भाषा कोमल एवं प्रभावशाली है
2. संस्कृत निष्ट खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।
3. एक पिता को दया भाव से परिपूर्ण दिखाया गया है।
4. प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग किया गया है।
5. पिता को अपने शिशु के प्रति अगाध प्रेम को दिखाया गया है।
6. बांस और बबूल से कठोरता की तुलना करने से वाक्य में सुंदरता आ गई है।
7. बांस, बबूल और शेफालिका के फूल का कवि ने मानवीकरण किया है।
8. क्या हुआ यदि हो सके ना परिचित पहली बार

पद संख्या-3

यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज

मैं न पाता जान

धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!

चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!

इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क

शब्दार्थ–

चिर–	दीर्घकालीन / लंबे समय तक।
प्रवासी–	प्रदेश (दूसरे देश) में रहने वाला।
इतर–	दूसरा।
अतिथि–	मेहमान।
संपर्क–	मेल।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत सम्मिलित जनकवि नागार्जुन की कविता 'यह दंतुरित मुस्कान' से ली गई है। बच्चे का पिता एक प्रवासी है अपनी पत्नी तथा अपने बच्चे को अनेकों धन्यवाद देता है जिसके कारण उसके रिक्त मन में प्रेमभाव जागा।

व्याख्या -इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने एक प्रवासी के टीस को व्यक्त करने की कोशिश की गई है। शिशु अपने प्रवासी पिता को पहचानने में असमर्थ होता है। प्रवासी अपने घर से दूर होता है। घर की गतिविधियों में समय पर शामिल नहीं हो पाता है। बच्चे के जन्म की एक लंबी अवधि के बाद पिता के आने के कारण बच्चा उसे पहचान नहीं पाता है इस पर पिता को टीस तो अवश्य होती है किंतु इस परिस्थिति से वह समझौता कर लेता है। वह अपनी पत्नी और शिशु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है कि इन दोनों के कारण ही वो आज कठोर जीवन में सुख के क्षण पा सका।

विशेष-

1. कवि ने सरस कोमल शब्दों का प्रयोग किया है।
2. प्रवासी शब्द से टीस (पीड़ा) की अनुभूति होती है।

© JCERT not to be republished

3. खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

4. एक स्त्री की महत्ता मां के रूप में किया गया है।

5. एक प्रवासी का अपने परिवार के प्रति प्रेम भावना को दर्शाया गया है।

पद संख्या-4

उँगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क

देखते तुम इधर कनखी मार

और होतीं जब कि आँखें चार

तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान

मुझे लगती बड़ी ही छविमान!

शब्दार्थ-

मधुपर्क-	अमृत (दूध, दही, शहद, घी, जल का संयोग से बना मिश्रण)।
कनकी मारना-	तिरछीनजरों से देखना।
छविमान-	सुंदर।

प्रसंग -प्रस्तुत पंक्तियां जनकवि नागार्जुन जी द्वारा रचित दंतुरित मुस्कान से ली गई है। कविता के इस अंश में हम देखते हैं कि पिता से अपरिचित होने के कारण बच्चा अपने पिता से दूरी बनाए हुए रहता है।

व्याख्या -कवि कहते हैं कि बच्चा उन्हें अतिथि जानकर उससे देरी बनाए रखता है। बच्चे और पिता में जो घनिष्ठता होनी चाहिए वह अभी तक बन नहीं पाई है। जन्म से ही बच्चे ने अपनी मां का ही स्पर्श बोध पाया है।अपनी मां का सानिध्य प्राप्त करने का एक अनूठा तरीका उसके पास है वह अपनी मां की उंगलियों को मधुपर्क अर्थात पंचामृत की भांति चूसता है क्योंकि उसकेअभी दांत निकलने का समय है ऐसा माना जाता है कि जब बच्चे की दांत निकलती है तो वह स्वभाविक प्रक्रिया के दौरान कोई भी वस्तु को मुंह में लेकर चूसना चाहता है। ऐसे में उसे अपनी मां की उंगलियों को चूसना अमृत की भांति ही प्रतीत होता है।मधुपर्क को अन्न के रूप में भी जाना जाता है। पिता को ऐसा लगता है कि उसकी अनुपस्थिति में उसकी मां ने मधुपर्क स्नेह रूपी अमृत का पान कराकर उसे बड़ा किया है। बच्चा अपने बाल सुलभ स्वभाव के कारण पिता को तिरछी नजरों से भी ताकता रहता है, जो पिता को भाव भिवोर कर देने पर बाध्य कर देता है।

विशेष-

1. खड़ी बोली के साथ-साथ मधुपर्क जैसे तत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।
2. कनखी मारना में बोलचाल के शब्द है।
3. आंखें चार होना में मुहावरा है।
4. मां की उंगलियों को चटना बच्चे का बाल सुलभ स्वभाव को दर्शाता है।
5. पिता का अपने बच्चे की मुस्कान और कनखी मारने की कला पर सम्मोहित होता दिखाया गया है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1. बच्चे की दंतुरित मुस्कान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है

उत्तर- बच्चे की मुस्कान देखकर कवि अपनी सारे दुख निराशा को भूल जाता है उसकी दंतुरित मुस्कान को देखकर कवि भाव विभोर हो जाता है।

प्रश्न 2. बच्चे की मुस्कान और बड़े व्यक्ति की मुस्कान में क्या अंतर है?

उत्तर- बच्चे और बड़े की मुस्कान में भारी अंतर देखने को मिलता है। जहां बच्चा बिना स्वार्थ के सब को देख कर हंस पड़ता है वही बड़े व्यक्ति अपनी मुस्कान पर नियंत्रण रखते हैं। जहां बड़े व्यक्तियों के स्वार्थ सिद्ध होते हैं वही वे मुस्कुराते हैं।

प्रश्न 3. कवि ने बच्चे की मुस्कान के सौंदर्य को किन-किन बिंबो के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर -कमल के फूल, शेफालिका के फूल

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए:

(क) छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।

(ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल?

(क) कभी ने इन पंक्तियों के माध्यम से नवजात शिशु की तुलना कमल फूल के सुंदरता से की है। कवि कहते हैं की धूल से सना बच्चा उन्हें तालाब में खिले कमल की भांति प्रतीत हो रहा है। जिस प्रकार से कमल तालाब के कीचड़ में भी खिलकर सुंदरता को प्रकट करता है वैसे ही बच्चा धूल से सना होने के बाद भी मनमोहक दिख रहा है।

(ख) कवि कहते हैं कि एक प्रवासी पिता को जब बच्चा स्पर्श करता है तो उसका ह्रदय शेफालीक फूल के समान कोमलता महसूस करता है। कवि कहते हैं कि पिता को अपना स्पर्श बांस और बबूल की भांति शुष्क प्रतीत होता है ऐसे में बच्चे का स्पर्श कवि के अंदर कोमलता का आभास कराता है।

नागार्जुन द्वारा रचित फसल पाठ का पाठ -परिचय नागार्जुन अपने स्वभाव से फक्कड़ और घुमक्कड़ थे।उन्होंने देश के कई हिस्सों में यात्राएं की थी तभी तो उन्हें यात्रि के नाम से भी जाना जाता है। एक यात्री के रूप में उन्होंने देश में विभिन्न विविधता को देखा उनकी रचना सर्वहारा वर्ग से लेकर प्रकृति तक को छूता है इसी का एक उदाहरण हमें फसल कविता में देखने को मिलता है।फसल जनवादी कवि नागार्जुन जी द्वारा रचित कविता है। उनकी रचनाओं में मेहनतकश इंसान विशेष स्थान रखता है। अक्सर(अधिकांश) नागार्जुन अपनी रचनाओंके के द्वारा ऐसे विषय वस्तु के साथ लोगों को जोड़ने का प्रयास करते हैं जिसे अनदेखा कर दिया जाता है। फसल रचना भी इसी प्रकार की एक रचना है।प्रया: हमारे मस्तिष्क में यह प्रश्न

© JCERT not to be republished

फसल

गिनतियों का प्रयोग– प्रगतिशील धारा के समर्थक कवि होने के नाते इनकी रचनाओं में सर्वहारा वर्ग को सदैव से ही स्थान मिला है।फसल कविता किसानों और मजदूरों को समर्पित कविता है। फसल के उत्पादन में कवि ने व्यापक तौर पर देश में लगे किसानों मजदूरों के योगदान को संख्याओं में व्यक्त किया है। कवि ने फसल उत्पादन में लगे लोगों के हमारे जीवन में कितना अधिक महत्व है इसे दर्शाने के लिए संख्याओं में गिनती की है क्योंकि फसल किसी एक के मेहनत के बदौलत नहीं उग सकता इसमें कई लोगों की मेहनत लगी रहती है।उनके प्रति आभार व्यक्त करने के लिए कवि ने संख्याओं का प्रयोग किया है।उनके योगदान की अपनी गरिमा है। नागार्जुन प्रया: देश का भ्रमण किया करते थे। उन्होंने संसाधन के रूप में उपलब्ध प्रकृति और मानव का अवलोकन किया जिनकी बदौलत हमें स्वाद, तृप्ति और पुष्टि मिलती हैं। संभवत इसीलिए कवि ने प्रकृति और मेहनतकश लोगों के द्वारा किए जा रहे उपकारों को उन्होंने असंख्य संख्यायों में गिन कर आपना आभार व्यक्त किया है।

एकता का प्रतीक फसल– प्राकृतिक बनावट अलग होने के कारण पैदावार में भी विभिनता होती है देश एक जैसे फसल का उत्पादन नहीं कर सकती इसलिए पूरे देश एक दूसरे के ऊपर निर्भर है। हमारे स्वाद, तृप्ति और पेट भरने के लिए फसल मिलो सफर तय करके आता है। अर्थात कई क्षेत्रों के नदियों का जल और मिट्टी के उपजाऊ कण और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की मेहनत के बदौलत(कारण) हमें स्वाद, तृप्ति और पेट भरने के लिए फसल की प्राप्ति हो पाती है और मिट्टी के तत्व जो फसल को पोषण देती है यह नदिया के जल जो सीधे पहाड़ों के सीने को चीरते हुए और रास्ते में कई नदियों से मिलते हुए हमारे खेतों तक आती है और अपनी उपजाऊ मिट्टी को खेतों में पसार देती है।

पंचमहाभूतों का योगदान– फसल उत्पादन में केवल लोगों के मेहनत ही नहीं बल्कि प्रकृति के सहयोग की भी आवश्यकता होती है।नदियों का पानी (जल तत्व) वर्षा (आकाश तत्व) मिट्टी (पृथ्वी तत्व) सूर्य का ताप (अग्नि तत्व) एवं हवा (वायु तत्व) के स्पर्श से ही फसल पुष्ट होकर देश की भूख को मिटता है।

उपभोक्तावाद की संस्कृति में मेहनतकश मजदूर का महत्व–हमारे देश की उपभोक्ता संस्कृति में यह बहुत ही आसान है कि केवल हम अपने स्वाद,तृप्तीऔर पेटभरने के लिए फसल का उपभोग करते हैं। इस देश के खाद्यान्न आपूर्ति में जिन मेहनतकश किसान और मजदूरों की सहभागिता रहती है यह उनकी गरिमा को दर्शाती है क्योंकि यह मेहनतकश वर्ग अगर उत्पादन करना छोड़ दें और खाद्यान्न आपूर्ति करने से अपने हाथ खड़े कर लें तो हमारी उपभोक्तावाद की संस्कृति तत्काल ही धराशाई हो जाएगी यह किसान हमारे कृषि संस्कृति को बचाए हुए हैं। ये किसान देश के भूख को मिटाने वाले अन्नदाता हैं।इसलिए तो कवि ने इन्हें अपनी कविता में महान और गर्व के भाव से रेखांकित किया है।

© JCERT not to be republished

नहीं आता कि कि इस फसल को तैयार करने में किन लोगों का योगदान है,यह फसल जो हमें भोजन के रुप में तृप्त कर रही है इसके पीछे कौन -कौन सी शक्तियां सम्मलित हैं। यह कविता उपभोक्तावाद की संस्कृति में हमें कृषि संस्कृति और उससे जुड़े किसान और प्रकृति के योगदान के निकट ले जाती है। आइए कविता में निहित भाव को कुछ बिंदुओं के द्वारा समझने का प्रयास किया जाए-

फसल कविता की व्याख्या

मूल काव्यांश १-

एक के नहीं,

दो के नहीं,

ढ़ेर सारी नदियों के पानी का जादू;

एक के नहीं,

दो के नहीं,

लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा;

एक की नहीं,

दो की नहीं,

हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म;
फसल

शब्दार्थ-

ढेर-	एक बड़ी संख्या या मात्रा।
कोटि-	करोड़।
स्पर्श-	छुअन।
गरिमा-	महत्व।
गुण-धर्म -	प्रकृति,स्वभाव।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश कवि नागार्जुन जी द्वारा रचित कविता फसल से उद्धृत है। इस काव्यांश में कवि ने मानवीय क्रियाकलापों और प्रकृति के सहयोग से उगने वाले फसल की चर्चा की है।

व्याख्या- प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने मेहनतकश इंसान के साथ प्रकृति के पंचमहाभूतों का योगदान फसल के निर्माण के लिए आवश्यक माना है।उपरोक्त काव्यांश में हम देख पाते हैं कि एक फसल के निर्माण में जल और मिट्टी के अवयव (तत्व) काफी आवश्यक है।नदिया पहाड़ों का सीना को चीरते हुए बादलद्वारा बरसाए गए जल और मानव द्वारा निर्मित नहर के जल के साथ देश के विभिन्न हिस्सों में पहुंचती है और अपने साथ में कई क्षेत्रों की मिट्टियों को भी लेकर आती है और खेतों में पसार देती है ताकि नमी युक्त मिट्टी फसल में जीवनरस उत्पन्न करके फसल का पोषण करें, किंतु फसल इतने भर से तैयार नहीं हो जाती। कई एक मानवीय क्रियाएं भी इसमें शामिल होती हैं जैसे किसान जहां फसल के उत्पादन से जुड़े होते हैं वहीं फसल को हम तक लाने के लिए कई लोग उसमें अपनी भागीदारी निभाते हैं। इस प्रकार मानव और प्रकृति कई मिलो का सफर तय करते हुए देश की संपूर्णता को प्रकट करती है।

विशेष-

1. काव्यांश में साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।
2. कोटि-कोटि,स्पर्श,गरिमा आदि जैसे तत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

© JCERT not to be republished

3. काव्यांश की भाषा सरल सुबोध है।
4. काव्यांश को पढ़ते समय कृषि संस्कृति के निकट अपने आप को पाठक पाते हैं।
5. मेहनतकश लोगों के प्रति कवि का सम्मान दिखता है।
6. पंचमहाभूत के रूप में प्रकृति महिमा को उभारा गया है।
7. हजार हजार, लाख लाख एवं कोटि-कोटि में अनुप्रास और पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
8. संख्यायों के द्वारा कवि ने मेहनतकश लोगों और महा पंचभूत के प्रति अपना धन्यवाद ज्ञापन किया है।
9. फसल के उत्पादन से लेकर वितरण की प्रक्रिया भारत की एकता को दर्शाता है।

मूल काव्यांश-२

और तो कुछ नहीं है वह

नदियों के पानी का जादू है वह

हाथों के स्पर्श की महिमा है

भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म है

रूपांतर है सूरज की किरणों का

सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

शब्दार्थ-

संदली मिट्टी-	चंदन के समान हल्की पीली मिट्टी, खुशबू से युक्त मिट्टी।
रूपांतर-	किसी वस्तु के रूप या आकार में बदलाव।
सिमटा -	सिकुड़न, सिकुड़ हुआ।
संकोच -	लज्जा, झिझक, हिचकिचाहट।
थिरकन -	नाचने की अवस्था, इठलाना।
महिमा -	गर्व,गौरव।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश कवि नागार्जुन द्वारा रचित कविता 'फसल' से उद्धृत है। यहां कवि ने पंचमहाभूत (पृथ्वी जल वायु अग्नि आकाश) के सहयोग और मानव -स्पर्श के द्वारा आकृति लेने वाली फसल के बारे में वर्णन किया है।

व्याख्या- उपरोक्त काव्यांश में कवि ने मेहनतकश इंसान और प्रकृति का सहयोग को फसल के निर्माण के लिए आवश्यक माना है फसल के निर्माण के लिए मिट्टी और जल आवश्यक अवयव (तत्व) है। धरती के पीसने से मिट्टी उर्वरता प्राप्त करती है जिससे फसल को पोषण रुपि जीवन रस प्राप्त होता है। कई क्षेत्र की नदियां आपस में मिलकर फसल को नमी प्रदान करती है।आकाश में स्थित सूर्य के ताप से फसल ऊर्जा पाकर पुष्ट होती है और हवा अपने तेज गति को छोड़कर धीमे-धीमे फसल को स्पर्श करके उसे लहलहाने में मदद करती है। किंतु फसल इतने भर से तैयार नहीं हो जाता इसमें किसान के देखभाल और अन्य लोगों की भागीदारी भी होती है जो फसल को हम तक पहुंचा कर हमारे भूख को मिटाते हैं।

© JCERT not to be republished

इसलिए कवि ने इन्हें अपनी कविता में महान और गर्व के भाव से रेखांकित किया है।

विशेष-

1. काव्यांश में साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।
2. कोटि-कोटि,स्पर्श,गरिमा आदि जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।
3. काव्यांश की भाषा सरल सुबोध है।
4. काव्यांश को पढ़ते समय कृषि संस्कृति के निकट अपने आप को पाठक पाते हैं।
5. मेहनतकश लोगों के प्रति कवि का सम्मान दिखता है।
6. पंचमहाभूत के रूप में प्रकृति महिमा को उभारा गया है।
7. हजार- हजार,लाख -लाख एवं कोटि-कोटि में अनुप्रास और पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
8. संख्यायों के द्वारा कवि ने मेहनतकश लोगों और महा पंचभूत के प्रति अपना धन्यवाद ज्ञापन किया है।
9. फसल के उत्पादन से लेकर वितरण की प्रक्रिया भारत की एकता को दर्शाता है।
10. हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच में मानवीकरण अलंकार है।
11. प्रश्नोत्तर शैली का भी प्रयोग किया गया है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न 1. फसल कविता किसकी रचना है?

(a) जयशंकर प्रसाद(b) नागार्जुन

(c) महादेवी वर्मा (d) सुमित्रानंदन पंत

उत्तर-(b) नागार्जुन

प्रश्न 2. फसल कविता किन के समन्वित प्रयास की कविता है?

(a) मेहनती लोग एवं प्रकृति का

(b) गांव के लोगों का

(c) शहरी लोगों का

(d) जवानों का

उत्तर-(a) मेहनती लोग एवं प्रकृति का

प्रश्न 3. फसल कविता किसका प्रतीक है?

(a) मेहनत, प्रयास एवं एकता का

(b) लड़ाई का

(c) गरीबी का

(d) बेरोजगारी का

उत्तर-(a) मेहनत, प्रयास एवं एकता का

प्रश्न 4. फसल कविता में पानी को क्या माना गया है?

(a) काला जादू (b) जादू

(c) वितरण (d) उत्पादन

उत्तर-(b) जादू

© JCERT not to be republished

प्रश्न 5. फसल कविता में कवि ने कितने नदियों का जादू फसल उत्पादन के लिए आवश्यक माना है?

(a) एक नदी का

(b) सौ नदी का

(c) आजादी का

(d) अनगिनत नदियों का

उत्तर-(d) अनगिनत नदियों का

प्रश्न 6. फसल किस की गरिमा है?

(a) मेहनतकश लोगों का

(b) आलसी लोगों का

(c) जवान लोगों का

(d) लोगों का

उत्तर-(a) मेहनतकश लोगों का

प्रश्न 7. किस प्रकार की मिट्टी फसल के लिए उपयोगी मानी जाती है?

(a) पथरीली मिट्टी

(b) बंजर मिट्टी

(c) भूरी–काली–संदली मिट्टी

(d) अनपजाऊ मिट्टी

उत्तर-(c) भूरी–काली–संदली मिट्टी

प्रश्न 8. भूरी–काली–संदली मिट्टी किस प्रकार की मिट्टी है?

(a) पथरीली मिट्टी (b) बंजर मिट्टी

(c) उपजाऊ मिट्टी (d) अनपजाऊ मिट्टी

उत्तर-(c) उपजाऊ मिट्टी

प्रश्न 9. संदली मिट्टी का अर्थ बताएं।

(a) खुशबूदार मिट्टी

(b) बंजर मिट्टी

(c) बदबूदार मिट्टी

(d) अनपजाऊ मिट्टी

उत्तर-(a) खुशबूदार मिट्टी

प्रश्न 10. उपभोक्तावाद की संस्कृति में हम लोग किस से दूर होते जा रहे हैं?

(a) बाजारू संस्कृति से

(b) औद्योगिक संस्कृति से

(c) किसानी संस्कृति से

(d) भारतीय संस्कृति से

उत्तर-(b) किसानी संस्कृति से

प्रश्न 11. फसल किसका रूपांतर है?

(a) सूरज की किरणों का

(b) चांद की किरणों का

(c) शरद ऋतु का

(d) वर्षा ऋतु का

उत्तर-(a) सूरज की किरणों का

प्रश्न 12. फसल को कौन थिरकते हुए स्पश्न करता है?

(a) बादल (b) धरती

(c) सूरज (d) हवा

उत्तर-(d) हवा

प्रश्न 13. फसल हवा के थिरकन से सिमटा हुआ क्या है?

(a) खुशी है (b) आंसू है

(c) संकोच है (d) भार है

उत्तर-(c) संकोच है

प्रश्न 14. कवि ने हाथों के स्पर्श को क्या कहकर व्यक्त करना चाहा है?

(a) गरीमा और महिमा

© JCERT not to be republished

(b) लघुता

(c) अनावश्यक

(d) बेकार

उत्तर-(a) गरीमा और महिमा

प्रश्न 15. फसल कविता हमें किस का सम्मान करना सिखाता है?

(a) औरतों का

(b) वृद्धों का

(c) गरीबों का

(d) मेहनतकश लोगों का

उत्तर-(d) मेहनतकश लोगों का

प्रश्न 16. हजार–हजार, लाख–लाख, कोटि–कोटि में कौन–सा अलंकार है?

(a) रूपक अलंकर

(b) उत्प्रेक्षा अलंकार

(c) मानवीय अलंकार

(d) अनुप्रास अलंकार

उत्तर-(d) अनुप्रास अलंकार

प्रश्न 17. नागार्जुन जी का जन्म कब हुआ?

(a) 1905 (b) 1907

(c) 1911 (d) 1915

उत्तर-(c) 1911

प्रश्न 18. नागार्जुन के जन्म वर्ष को याद रखने का ट्रिक (वर्ष 1911 में टाटा आय. रन एंड स्टील कंपनी ने कच्चा लोहा का उत्पादन करना शुरू किया।

(a) नागार्जुन जी की मृत्यु कब हुई।

(b) 1940

(c) 1962

(d) 1977

उत्तर-(d) 1998 ट्रिक–नागार्जुन के मृत्यु वर्ष को याद रखने का ट्रिक (वर्ष 1998 में भारत ने पोखरण में दूसरी बार परमाणु परीक्षण किया)

प्रश्न 19. नागार्जुन का मूल नाम क्या था?

(a) वैद्यनाथ मिश्र (b) बद्रीनारायण

(c) केदारनाथ पंडित(d) प्रेमधन

उत्तर-(a) वैद्यनाथ मिश्र

प्रश्न 20. वैद्यनाथ मिश्र हिंदी में किस उपनाम से लिखा करते थे?

(a) नागार्जुन (b) बद्रीनारायण

(c) केदारनाथ पंडित(d) प्रेमधन

उत्तर-(a) नागार्जुन

प्रश्न 21. नागार्जुन मैथिली भाषा में किस उपनाम से लिखा करते थे?

(a) राही (b) यात्री

(c) उग्र (d) मित्र

उत्तर-(b) यात्री

प्रश्न 2. नागार्जुन को मैथिली भाषा में लिखी गई किस रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया?

(a) बादल को घिरते देखा

(b) वरूण का बेटा

(c) पत्रहीन नग्न गाछ

(d) रतिनाथ की चाची

उत्तर-(c) पत्रहीन नग्न छाछ

© JCERT not to be republished

फसल पाठ का प्रश्न –अभ्यास

प्रश्न 1. कवि के अनुसार फसल क्या है?

उत्तर –क्रियाकलापों और महा पंच भूतों (पृथ्वी जल वायु आकाश अग्नि)का सहयोग ही फसल है।

प्रश्न 2. दो-कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कही गई है। वह आवश्यक तत्व कौन -कौन से हैं।

उत्तर –फसल उपजाने के लिए महापंचभूत अर्थात जल,मिट्टी,ऊर्जा,ताप एवं हवा के अतिरिक्त मानव श्रम एवं अन्य मानवीय क्रियाकलाप आवश्यक है।

प्रश्न 3. फसल को' हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर –जिस फसलों को हम केवल स्वाद, तृप्ति और पेट भरने का माध्यम मात्र मानते हैं हमारे देश के मेहनतकश वर्ग के परिश्रम रूपी योगदान है।ये वर्ग फसल के उत्पादन से लेकर वितरण प्रक्रिया में शामिल होकर एकजुटता का परिचय देते है।देश के खाद्यान्न आपूर्ति में मेहनतकश किसान और मजदूरों की सहभागिता रहती है अगर ये मेहनतकश वर्ग फसल उत्पादन करना छोड़ दें या खाद्यान्न आपूर्ति करने से अपने हाथ खड़े कर लें तो हमारी उपभोक्तावाद की संस्कृति तत्काल ही धराशाई हो जाएगी। सरकारी नीतियों की उपेक्षा,सम्मान की कमी होने के बावजूद भी यह वर्ग कृषि संस्कृति को नहीं छोड़ते हैं। इसलिए तो कवि ने इन्हें अपनी कविता में महान और गर्व के भाव से रेखांकित किया है।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए-रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।

उत्तर - सूर्य से प्राप्त होने वाला ऊर्जा और ताप ही फसल की पुष्टि का कारण है, क्योंकि सूर्य की उपस्थिति में ही फसल अपना भोजन प्राप्त करता है। फसल की पुष्ट होने मेंकेवल सूर्य ही नहीं बल्कि वायु भी अपना विशेष योगदान प्रदान करता है। हवा का स्वभाव चंचलता का होता है किंतु फसल पर वह बहुत ही धीमी गति से लहराता है। फसल को कोई नुकसान ना हो इसलिए तेज गति से लहराने में उसे संकोच होता है क्योंकि उसे इस बात का एहसास होता है कि है कि उसका स्पर्श फसल के निर्माण में आवश्यक है।

यह दंतुरित मुसकान–लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 'यह दंतुरित मुसकान' कविता के कवि कौन हैं एवं कविता का उद्देश्य क्या है?

उत्तर- 'यह दंतुरित मुसकान' कवि नागार्जुन द्वारा रचित है इस कविता के द्वारा कवि ने नवजात शिशु के मुस्कान और उसके प्रवासी पिता के संबंधों के बारे में दिखाया गया है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 2. दंतुरित मुस्कान का अर्थ बताएं?

उत्तर- 6 से 9 महीने तक के उम्र के बच्चे की हंसी को दंतुरित मुस्कान कहते है।

प्रश्न 3. एक दंतुरित मुस्कान वाला बच्चा कितने उम्र का हो सकता है?

उत्तर- छह से नौ महीने तक का बच्चा।

प्रश्न 4. यह दंतुरित मुसकान में कैसे पिता की कहानी को व्यक्त किया गया है?

उत्तर- एक प्रवासी पिता की कहानी को व्यक्त किया गया है।

प्रश्न 5. प्रवासी पिता कितने दिनों के बाद अपने घर को लौटता है?

उत्तर- एक लंबी अवधि के बाद वह घर वापस लौटता है।

प्रश्न 6. एक मृतक ने भी जान डाल देने की क्षमता किसमे है?

उत्तर- एक दंतुरित मुस्कान वाले छोटे से बच्चे की।

प्रश्न 7. बच्चे का शरीर किस से सना हुआ है?

उत्तर- धूल-धूसर से बच्चे का शरीर सना हुआ है।

प्रश्न 8. कौन तालाब को छोड़कर झोपड़ी में खिल उठा है और क्यों?

उत्तर- तालाब में खिलने वाला पुष्प कमल आज कवि के झोपड़ी में खिल उठा है,क्योंकि कवि को बच्चे की कोमलता और धूल से सना शरीर कमल की भांति प्रतीत हो रहा है।

प्रश्न 9. 'यह दंतुरित मुसकान मृतक में भी डाल देगी जान' वाक्य का प्रयोग किस अभिप्राय से हुआ है?

उत्तर- बच्चे की दंतुरित मुस्कान जीवन में हताशा निराशा समाप्त करने की क्षमता रखती है इसलिए कवि ने बच्चे की मुस्कान को इस प्रकार से बखान किया है।

प्रश्न 10. बच्चे के स्पर्श से कठिन पाषाण भी पिघल कर जल बन जाता है कैसे?

उत्तर- बच्चे के स्पर्श में इतनी कोमलता होती है कि उसके स्पर्श करने मात्र से कठोर हृदय बाला व्यक्ति भी सरस हो जाता है।

प्रश्न 11. किसके छू लेने भर मात्र से बांस या बबूल के वृक्ष से शेफालिका के फूल झड़ने लगें?

उत्तर- दंतुरित मुस्कान वाले बच्चे के छू लेने मात्र से बांस और बबूल के वृक्ष से शेफलिका के फूल झड़ने लगें।

प्रश्न 12. एक प्रवासी पिता (कवि) ने अपने को बांस या बबूल का वृक्ष क्यों माना है?

उत्तर- बांस और बबूल की प्रकृति शुष्क होती है प्रवासी पिता ने अपनी तुलना इन वृक्षों से इसलिए कि क्योंकि एक लंबी अवधि तक पारिवारिक गतिविधियों से दूर रहने के कारण कवि में भी बांस और बबूल के वृक्ष सी शुष्कता आ गई है।

प्रश्न 13. शेफालिका फूल की क्या विशेषता है बताइए?

उत्तर- शेफालिका के फूल अत्यंत कोमल होते हैं इनकी स्पर्श से कोमलता का आभास होता है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 14. कविता में बच्चे की किस स्वभाविक क्रियाओं की बात हुई है?

उत्तर- अपने प्रवासी पिता से पहली बार मिलने पर बच्चा अपने पिता को एकटक नजरों से देखता है। वहीं दूसरी तरफ जब पिता का बच्चे से आंखें चार होती है तो बच्चा पिता को कनखी मारता है।

प्रश्न 15. पिता को किस बात का अफसोस नहीं है?

उत्तर- बच्चे का पिता को पहचानना ना पाने के कारण कोई अफसोस नहीं होता है।

प्रश्न 16. बच्चा अपने पिता को पहचान नहीं पाता है इसका क्या कारण था?

उत्तर- एक प्रवासी पिता अपने घर की गतिविधियों से दूर रहने के कारण बच्चे के जन्म के समय उपस्थित नहीं हो सका और एक लंबी अवधि के बाद जब वह घर वापस लौटता है तो बच्चा उसे पहचान नहीं पाता है।

प्रश्न 17. अनिमेष देखने का क्या आशय है?

उत्तर- लगातार या एकटक देखने की क्रिया को अनिमेष कहते हैं।

प्रश्न 18. पिता बच्चे से अपनी आंखें क्यों फेर लेना चाहता है?

उत्तर- बच्चा अपने पिता को एकटक देखे जा रहा था इससे बच्चा थक गया होगा ऐसा सोचकर पिता बच्चा को आराम दिलाने के उद्देश्य से अपनी आंखें फेर लेना चाहता है।

प्रश्न 19. अपनी पत्नी को कवि क्यों धन्यवाद देना चाहता है?

उत्तर- कवि की पत्नी वह माध्यम है जिसके द्वारा बच्चा इस धरती पर आता है और पिता को बच्चे का स्नेह प्राप्त होता है।

प्रश्न 20. कवि ने चीर प्रवासी या अतिथि किसे कहा है और क्यों?

उत्तर- चिर प्रवासी और अतिथि का संबोधन कवि ने स्वयं के लिए किया है क्योंकि कवि प्रया: ही घर से दूर रहा करता है।

प्रश्न 21. किसकी उंगलियां बच्चे को मधुपर्क कराती है? मधुपर्क का अर्थ बताएं।

उत्तर- मां की उंगलियां बच्चे को मधुपर्क कराती है।मधुपर्क का अर्थ पंचामृत होता है।

प्रश्न 22. पंचामृत किन मिश्रणो के द्वारा तैयार किया जाता है?

उत्तर- भारत में पंचामृत की विशेष महत्व रहा है वैदिक काल के समय में इसे पूजा एवं अतिथियों के सम्मान के रूप में दिया जाता था। जल,दूध दही, घी तथा शहद के मिश्रण के द्वारा पंचामृत (मधुपर्क) तैयार होता है।

प्रश्न 23. बच्चा मां की गोद में बैठा पिता को कैसे देख रहा है?

उत्तर- मां की गोद में बैठा हुआ बच्चा अपने पिता को कनखी मारते हुए तिरछी नजरों से देख रहा है।

प्रश्न 24. बच्चा अपने पिता को तिरछी नजरों से क्यों देख रहा है?

उत्तर- शिशु का तिरछी नजरों से देखना एक स्वाभाविक क्रिया है। बच्चा अपने पिता से

© JCERT not to be republished

अपरिचित है इसलिए वह उसे तिरछी नजरों से देख रहा है।

प्रश्न 25. पिता को बच्चा कब छविमान लगता है?

उत्तर- बच्चा जब पिता से आंखें चार होने पर हंसता हुआतिरछी नजरों से देखता है तब पिता को बच्चे की यह मुस्कान बड़ी ही छविमान लगती है।

प्रश्न 26. "बांस था कि बबूल ? तुम मुझे पाए नहीं पहचान?" इन पंक्तियों मैं किस प्रकार की भाषा शैली का प्रयोग किया गया है?

उत्तर- प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 27. देखते ही रहोगे अनिमेष थक गए हो ?आंख लूं मैं फेर? इन पंक्तियों में किस प्रकार की भाषा शैली का प्रयोग किया गया है?

उत्तर- प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 28. धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य! किस प्रकार के वाक्य हैं?

उत्तर- इन पंक्तियों के माध्यम से कवि का अपने अपनी पत्नी और पुत्र के प्रति विश्मय (आश्चर्य) और हर्ष (खुशी)का भाव व्यक्त हो रहा है।

प्रश्न 29. चिर प्रवासी मै इतर, में अन्य! इन पंक्तियों के माध्यम से किस प्रकार का भाव व्यक्त हो रहा है?

उत्तर- इन पंक्तियों के माध्यम से एक प्रवासी पिता के ग्लानि बोध का।

प्रश्न 30. वाक्य में कुछ मुहावरों का प्रयोग किया गया है उदाहरण दें।

उत्तर- कनखी मारना,आंखें चार होना जैसे मुहावरों का प्रयोग कविता में हुआ है।

फसल कविता–लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. फसल कविता किसकी रचना है एवं रचना का क्या उद्देश्य है?

उत्तर- फसल कविता के रचनाकार नागार्जुन हैं। कविता का उद्देश्य मेहनतकश लोगों, कृषि संस्कृति एवं प्रकृति का सम्मान करना है।

प्रश्न 2. फसल कविता किन के समन्वित प्रयास की कविता है?

उत्तर- मेहनतकश लोगों, किसानों, मजदूरों, पंचमहाभूत शक्तियों (पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल, आकाशी) के समन्वित प्रयास की कविता हैं फसल।

प्रश्न 3. फसल कविता किसका प्रतीक है?

उत्तर- मेहनत, समन्वित प्रयास एवं एकता का प्रतीक है।

प्रश्न 4. फसल कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर- मनुष्य एवं प्रकृति एक दूसरे के पूरक हैं। फसल के उत्पादन में जितना महत्वपूर्ण स्थान मानव का है उतना ही प्रकृति का भी है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 5. कविता में कवि ने फसल उत्पादन के लिएअनगिनत प्रयास का वर्णन किया है। यहां अनगिनत प्रयास कौन-कौन से है ?

उत्तर- फसल कविता में अनगिनत नदियों,असंख्य हाथों,खेतों की मिट्टी, सूरज की किरणों और हवा के स्पर्श (थीरकन) का अनगिनत प्रयास है फसल।

प्रश्न 6. फसल कविता में पानी को क्या माना गया है?और क्यों?

उत्तर- फसल कविता में पानी को जादू माना गया है फसल उत्पादन में जल का होना अति आवश्यक है।यह मिट्टी को नमी और आवश्यक तत्व प्रदान करती है जिससे मिट्टी बीज का पोषण करके उसे फसल के रूप में उत्पन्न कर पाता है इसलिए जल को जादू के रूप में कवि ने प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 7. फसल कविता में कवि ने कितने नदियों का जादू फसल उत्पादन के लिए आवश्यक माना है?

उत्तर- अनगिनत नदियों के पानी कीउपलब्धता को कवि ने फसल के लिए आवश्यक माना है।

प्रश्न 8. फसल किस की गरिमा है?

उत्तर- फसल असंख्य मजदूरों किसानों और मेहनतकश लोगों के हाथों के स्पर्श की गरिमा है।

प्रश्न 9. कविता में कवि ने मिट्टी के किस गुण धर्म की बात की है?

उत्तर- मिट्टी का गुणवत्ता युक्त होना आवश्यक है। फसल उत्पादन के लिए मिट्टी का उपजाऊ होना आवश्यक है।

प्रश्न 10. भूरी-काली- संदली मिट्टी किस प्रकार की मिट्टी है?

उत्तर- फसल के उत्पादन के लिए सबसे उपयुक्त मिट्टी भूरी और काली मिट्टी को मान गया है।

प्रश्न 11. संदली शब्द का अर्थ बताएं?

उत्तर- खुशबूदार मिट्टी को संदली कहा गया है।

प्रश्न 12. क्या मिट्टी की खुशबू होती है?

उत्तर- हां मिट्टी की भी खुशबू होती है। मिट्टी में भी एक प्रकार की खुशबू होती है मिट्टी में नमी के कारण एक सोंधापन आ जाता है इसे ही कवि ने मिट्टी की खुशबू माना है।

प्रश्न 13. फसल असंख्य हाथों का योगदान है ऐसा कवि ने क्यों कहा है?

उत्तर- फसल के उत्पादन से लेकर उसे अन्न रूप में परिवर्तित करने और लोगों तक पहुंचाने की प्रक्रिया में कई लोग शामिल होते हैं इसलिए कवि ने इसे असंख्य लोगों का योगदान माना है।

प्रश्न 14. उपभोक्तावाद की संस्कृति में हम लोग किस से दूर होते जा रहे है?

उत्तर- उपभोक्तावाद की संस्कृति में हम लोग अपने कृषि संस्कृति को भूलते जा रहे हैं।

प्रश्न 15. उपभोक्तावाद की संस्कृति में लोग क्या भूलते जा रहे हैं?

© JCERT not to be republished

उत्तर- अपनी कृषि संस्कृति और कृषि उत्पादन में लगे मेहनतकश लोगों के मेहनत एवं सहयोग को लोग भूलते जा रहे हैं।

प्रश्न 16. फसल किसका रूपांतर है?

उत्तर- सूरज की किरणों का रूपांतर है फसल।

प्रश्न 17. रूपांतर का अर्थ बताएं?

बदले हुए रूप को रूपांतर कहा जाता है।

प्रश्न 18. सूर्य की किरणें फसल के उत्पादन में किस प्रकार सहायक है?

उत्तर- सूर्य की किरण की उपस्थिति में फसल अपना भोजन तैयार करता है इसलिए सूर्य की किरणें फसल के लिए आवश्यक है।

प्रश्न 19. फसल के उत्पादन में प्रकृति किस प्रकार से सहयोग करती है?

उत्तर- फसल के उत्पादन में प्रकृति विभिन्न रूपों से अपना सहयोग करती है जल से नमी, मिट्टी से पोषक तत्व, सूर्य से ताप और ऊर्जा और हवा से जीवन रूपी प्राणवायु प्राप्त करके एक फसल का निर्माण होता है।

प्रश्न 20. फसल को कौन थिरकते हुए स्पर्श करता है?

उत्तर- फसल को हवा थिरकते हुए हुए स्पर्श करता है।

प्रश्न 21. थिरकना का शाब्दिक अर्थ बताएं?

उत्तर- हाव-भाव के साथ नाचना, इठलाना।

प्रश्न 22. फसल हवा के थीरकन से सिमटा हुआ संकोच कैसे बन जाती है?

उत्तर- लहलाहाते फसल के ऊपर से हवा बड़े प्रेम से स्पर्श करते हुए आगे बढ़ती है। हवा का प्रेम पूर्वक स्पर्श पाकर फसल में एक लज्जा का भाव उत्पन्न हो जाता है इसलिए कवि ने हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच (लज्जा)फसल को माना है।

प्रश्न 23. फसल हमारे देश की एकता का प्रतीक है कैसे?

उत्तर- देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न प्रकार के फसलों का उत्पादन होता है और इसमें कई लोगों की भागीदारी होती है।देश की खाद्यान्न आपूर्ति में विभिन्न धर्म के और विभिन्न जाति के लोग अपना सहयोग करते हैं इसलिए इसे एकता का प्रतीक माना गया है।

प्रश्न 24. कवि ने हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा कहकर क्या व्यक्त करना चाहा है?

उत्तर- फसल के उत्पादन में अनेक मानवीय क्रियाएं शामिल होते हैं। इस देश के खाद्यान्न आपूर्ति में मेहनतकश किसान और मजदूरों की सहभागिता रहती है। अगर ये फसल उत्पादन से अपने हाथ खड़े कर ले तो देश की स्थिति चरमरा जाएगी यह हमारे अन्नदाता है। इसलिए कवि इनकी महिमा(महत्व) और गरिमा(गौरव) को महत्व देते हैं।

प्रश्न 25. फसल कविता हमें किस का सम्मान करना सिखाता है?

उत्तर- आज की उपभोक्तावाद संस्कृति में मेहनतकश लोगों के द्वारा ही खाद्यान्न आपूर्ति हो पाती है इसलिए हमें ऐसे मेहनतकश लोगों का सम्मान अवश्य करना चाहिए।

© JCERT not to be republished

यह दंतुरित मुसकान–बहु वैकल्पिक प्रश्न

प्रश्न 1. यह 'दंतुरित मुसकान' कविता के कवि कौन हैं?

(a) जयशंकर प्रसाद(b) नागार्जुन

(c) महादेवी वर्मा (d) सुमित्रानंदन पंत

उत्तर-(b) नागार्जुन

प्रश्न 2. एक दंतुरित मुस्कान वाला बच्चा कितने उम्र का हो सकता है?

(a) दो से तीन महीने का बच्चा

(b) चार से पांच महीने का बच्चा

(c) छह से नौ महीने का बच्चा

(d) आठ से दस महीने का बच्चा

उत्तर-(c) छह से नौ महीने का बच्चा

प्रश्न 3. यह दंतुरित मुसकान में केसे पिता की कहानी को व्यक्त किया गया है?

(a) एक शहरी पिता की कहानी।

(b) एक ग्रामीण पिता की कहानी।

(c) एक वृद्ध पिता की कहानी।

(d) एक प्रवासी पिता की कहानी।

उत्तर-(d) एक प्रवासी पिता की कहानी।

प्रश्न 4. प्रवासी पिता कितने दिनों के बाद अपने घर को लौटता है?

(a) एक छोटी अवधि के बाद।

(b) एक महीने के बाद।

(c) एक लंबी अवधि के बाद।

(d) चार महीने के बाद।

उत्तर-(c) एक लंबी अवधि के बाद।

प्रश्न 5. एक मृतक में भी जान डाल देने की क्षमता किसमें है?

(a) गुस्सैल बच्चे में।

(b) एक दंतुरित मुस्कान वाले छोटे से बच्चे में

(c) शांत स्वभाव वाले बच्चे में।

(d) बदमाश बच्चे में।

उत्तर-(b) एक दंतुरित मुस्कान वाले छोटे से बच्चे में।

प्रश्न 6. बच्चे का शरीर किस से सना हुआ है?

(a) राख से

(b) राखयुकत मिट्टी से

(c) गोबर से

(d) धूल से

उत्तर-(d) धूल से

प्रश्न 7. कौन तालाब छोड़कर झोपड़ी में खिल उठा है?

(a) कमल

(b) वृद्ध महिला

(c) वृद्ध पुरुष

(d) पांच साल का बच्चा

उत्तर-(a) कमल

प्रश्न 8. किसके स्पर्श से कठिन पाषाण भी पिघल कर जल बन जाता है?

(a) बच्चे के स्पर्श से

(b) वृद्ध महिला के स्पर्श से

(c) वृद्ध पुरुष के स्पर्श से

© JCERT not to be republished

(d) फूलों के स्पर्श से

उत्तर-(a) बच्चे के स्पर्श से

प्रश्न 9. किसके छू लेने भर मात्र से बांस या बबूल के वृक्ष से शैफालिका के फूल झड़ने लगे?

(a) बच्चे के छूने से

(b) वृद्ध महिला के छूने से

(c) भाई के छूने से

(d) वृद्ध पुरुष के छूने से

उत्तर-(a) बच्चे के छूने से

प्रश्न 10. शैफालिका क्या है?

(a) एक खाद्य पदार्थ

(b) एक प्रकार की मिठाई

(c) एक प्रकार का फूल

(d) एक प्रकार की झाड़ी

उत्तर-(c) एक प्रकार का फूल

प्रश्न 11. कविता में कौन अपने को बांस या बबूल का वृक्ष मानता है?

(a) प्रवासी पिता (b) प्रवासी माता

(c) भाई (d) बहन

उत्तर-(a) प्रवासी पिता

प्रश्न 12. शेफालिका का फूल किसका प्रतीक है?

(a) कठोरता का (b) कोमलता का

(c) शांति का (d) तनाव का

उत्तर-(b) कोमलता का

प्रश्न 13. कविता में बांस और बबूल का वृक्ष किसका प्रतीक है?

(a) शुष्कता का (b) कोमलता का

(c) शांति का (d) तनाव का

उत्तर-(a) शुष्कता का

प्रश्न 14. अनिमेष देखने का अर्थ बताइए।

(a) लगातार सोचना

(b) लगातार सोना

(c) लगातार बात करना

(d) लगातार या एकटक देखना

उत्तर-(d) लगातार या एकटक देखना

प्रश्न 15. पिता बच्चे से अपनी आँखें क्यों फेर लेना चाहता है?

(a) बच्चा आराम कर सके

(b) बच्चा रो सके

(c) बच्चा हंस सके

(d) बच्चा खेल सके

उत्तर-(a) बच्चा आराम कर सके

प्रश्न 16. पिता किसे धन्यवाद देता है?

(a) अपनी पत्नी को

(b) अपने पिता को

(c) अपनी माता को

(d) गांव वाले को

उत्तर-(a) अपनी पत्नी को

प्रश्न 17. कवि ने चीर प्रवासी या अतिथि किसे कहा है?

(a) अपने पिता को (b) स्वयं को

(c) अपनी माता को (d) गांव वाले को

उत्तर-(b) स्वयं को

प्रश्न 18. किसकी उंगलियाँ बच्चे को मधुसंपर्क कराती हैं?

© JCERT not to be republished

(a) माँ की उंगलियां

(b) पिता की उंगलियां

(c) दादी की उंगलियां

(d) दादा की उंगलियां

उत्तर-(a) माँ की उंगलियां

प्रश्न 19. माँ की उंगलियां बच्चे को कैसा प्रतीत होती हैं?

(a) चीनी के समान (b) नमक के समान

(c) मधुपर्क के समान(d) रोटी के समान

उत्तर-(c) मधुपर्क के समान

प्रश्न 20. मधुपर्क का अर्थ बताएं।

(a) पंचामृत (b) बताशा

(c) मिठाई (d) हलवा

उत्तर-(a) पंचामृत

प्रश्न 21. बच्चा माँ की गोद में बैठा पिता को कैसे देख रहा है?

(a) शांत भाव से (b) रोने के भाव से

(c) उदास भाव से (d) कनखी मारते हुए

उत्तर-(d) कनखी मारते हुए

प्रश्न 22. छविमान का अर्थ बताएं।

(a) भद्दा (b) क्रूर

(c) सुंदर (d) विचित्र

उत्तर-(c) सुंदर

प्रश्न 23. "बांस था कि बबूल? तुम मुझे पाए नहीं पहचान?" किस प्रकार के वाक्य हैं?

(a) प्रश्नवाचक वाकय

(b) निषेधवाचक वाक्य

(c) इच्छावाचक वाक्य

(d) आज्ञावाचक वाक्य

उत्तर-(a) प्रश्नवाचक वाक्य

प्रश्न 24. "देखते ही रहोगे अनिमेष थक गए हो? आंख लूं मैं फेर?" ये पंक्तियाँ किस पाठ से ली गई हैं?

(a) बादल राग से

(b) फसल से

(c) ग्राम श्री से

(d) यह दंतुरित मुसकान से

उत्तर-(d) यह दंतुरित मुसकान से

प्रश्न 25. धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य! ये पंक्तियाँ किस पाठ से ली गई हैं?

(a) बादल राग

(b) फसल

(c) ग्राम श्री

(d) यह दंतुरित मुसकान

उत्तर-(d) यह दंतुरित मुसकान

प्रश्न 26. चिर प्रवासी मैं इतर, में अन्य! पंक्तियाँ किस पाठ से ली गई हैं?

(a) बादल राग

(b) फसल

(c) ग्राम श्री

(d) यह दंतुरित मुसकान

उत्तर-(d) यह दंतुरित मुसकान

प्रश्न 27. बच्चा माँ की गोद में बैठा पिता को कैसे देख रहा है?

(a) शांत नजरों से (b) कड़ी नजरों से

(c) तिरछी नजरों से(d) स्थिर नजरों से

उत्तर-(c) तिरछी नजरों से

© JCERT not to be republished

प्रश्न 28. कनखी मारना, आँखें चार होना कया है?

(a) पर्यायवाची शब्द (b) मुहावरा

(c) विलोम शब्द (d) लोकगीत

उत्तर-(b) मुहावरा

प्रश्न 29. नागार्जुन जी का जन्म कब हुआ?

(a) 1905 (b) 1907

(c) 1911 (d) 1915

उत्तर-(c) 1911

प्रश्न 30. नागार्जुन जी की मृत्यु कब हुई?

(a) 1940 (b) 1962

(c) 1977 (d) 1998

उत्तर-(s) 1998

प्रश्न 31. नागार्जुन का मूल नाम क्या था?

(a) वैद्यनाथ मिश्र (b) बद्रीनारायण

(c) केदारनाथ पंडित (d) प्रेमधन

उत्तर-(a) वैद्यनाथ मिश्र

प्रश्न 32. वैद्यनाथ मिश्र हिंदी में किस उपनाम से लिखा करते थे?

(a) नागार्जुन (b) बद्रीनारायण

(c) केदारनाथ पंडित (d) प्रेमधन

उत्तर-(a) नागार्जुन

प्रश्न 33. नागार्जुन 'मैथिली' भाषा में किस उपनाम से लिखा करते थे?

(a) राही (b) यात्री

(c) उग्र (d) मित्र

उत्तर-(b) यात्री

प्रश्न 34. नागार्जुन को मैथिलीभाषा में लिखी गई किस रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया?

(a) बादल को घिरते देखा

(b) वरुण का बेटा

(c) पत्रहीन नग्न छाछ

(d) रतिनाथ की चाची

उत्तर-(c) पत्रहीन नग्न छाछ

© JCERT not to be republished